17 अक्टूबर 2015, कुल पृष्ठ : 12, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' स्मृति विशेषांक

वर्ष : 38, अंक : 14 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (द्वितीय), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति, देशभर में शोक सभायें

(1) कोटा (राज.) में दिनांक 3 अक्टूबर को बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के देहावसान के प्रसंग पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर देशभर से सैंकड़ों आत्मार्थी मुमुक्षुजन कोटा पहुँचे। सभा के प्रारम्भ में मुमुक्षु मण्डल कोटा के अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्दजी जैन ने बाबूजी का परिचय देते हुये उनके उपकारों को स्मरण किया।

तदुपरान्त पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन ने उनके अन्तिम समय का विस्तृत विवरण बताते हुये समाधिपूर्वक उनके देहविलय की बात कही।

सभा में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने कहा कि युगलजी के साथ हमने लगभग 60 वर्षों तक कंधे से कंधा मिलाकर वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का कार्य किया है। उनका व्यक्तित्व सबसे अलग हटकर था। उनका लेखन, उद्बोधन, भाषा-शैली, बोलचाल, पहनावा सब कुछ विशिष्ट था। उनके लेखन एवं प्रवचन की प्रत्येक पंक्ति स्वयं बोलती है कि मैं युगलजी की हूँ। ऐसे व्यक्तित्व का वियोग मुमुक्षु समाज के लिये अपूरणीय क्षति है।

इसके अतिरिक्त पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, डॉ. सुदीपजी जैन दिल्ली, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, श्री सतीशजी दोशी मुम्बई, श्री अजितकुमारजी जैन बड़ौदा आदि ने अपने वक्तव्य के माध्यम से बाबूजी का उपकार स्मरण करते हुये उनके सुपुत्र चिन्मय जैन एवं समस्त परिवार को तत्त्वज्ञान के अवलम्बन से सहज/शांत रहने हेतु उद्बोधन दिया।

अन्य उपस्थित विशिष्ट महानुभावों में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली आदि अनेक विद्वानों के अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी शास्त्री, पण्डित चैतन्यजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित निकलंकजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित अभिलाषजी शास्त्री आदि स्थानीय विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सभा का संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं श्री अजितजी जैन ग्वालियर ने किया।

(2) मुमुक्षु समाज के मूर्धन्य विद्वान तलस्पर्शी आध्यात्मिक चिन्तक बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के देहविलय पर दिनांक 1 अक्टूबर 2015 को रात्रि में ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर टोडरमल महाविद्यालय के छात्र प्रतिनिधि संयम जैन नागपुर, टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक प्रतिनिधि के रूप में डॉ.दीपकजी जैन एवं अनिलजी शास्त्री, दैनिक स्वाध्याय के श्रोताओं के प्रतिनिधि के रूप में श्री ताराचंदजी सोगानी, ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, युवा फैडरेशन की ओर से श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, ट्रस्टी ब्र. यशपालजी जैन एवं महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल इत्यादि ने उनके जीवन से संबंधित संस्मरण सुनाते हुये उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला और श्रद्धांजलि दी। अन्त में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने उनके जीवन व साहित्य का परिचय देते हुये उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला।

सभा का संचालन करते हुये उपप्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने उनकी अनेक रचनाओं के मार्मिक अंश सुनाये। सभा में श्री अनिलजी सेठी, श्री शांतिलालजी अलवर आदि अनेक मुमुक्षुगण उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि सभा के पूर्व बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के नियमसार ग्रंथ पर वीडियो प्रवचन का सभी ने लाभ लिया।

ज्ञातव्य है कि प्रात:काल श्री दि. जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर जौहरी बाजार में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के सान्निध्य में श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इसके अतिरिक्त दिल्ली, उदयपुर, कलकत्ता, नागपुर, ग्वालियर, भिण्ड, अलवर, बैंगलोर, छिन्दवाड़ा, देवलाली, विदिशा, जबलपुर, मंगलायतन, मुम्बई आदि शताधिक स्थानों पर शोक सभायें आयोजित की गईं। ●

सम्पादकीय –

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्य भक्त –

श्री जुगलकिशोरजी 'युगल'

श्री युगलजी के विषय में कुछ भी कहना 'सूरज को दीपक दिखाना' है। वे महान व्यक्तित्व के धनी थे। यद्यपि उन्हें अपनी प्रशंसा बिलकुल भी नहीं सुहाती थी, किन्तु जो वास्तविकता है, उसे बिना कहे भी कैसे रहा जा सकता है ? जब उन्होंने सोनगढ और श्रीकानजीस्वामी के अपूर्व व्यक्तित्व और उनके मत परिवर्तन के बारे में सुना तो वे स्वयं भी उत्साहित हुये और उन्हें अपने मत परिवर्तन में जरा भी संकोच नहीं हुआ।

यद्यपि युगलजी वैष्णव कुल में जन्मे थे, परन्तु वे भली होनहार से छोटी उम्र में ही शुद्ध तेरापंथी दिगम्बर जैन हो गये थे। श्री युगलजी बारां (राज.) के मूल निवासी थे, किन्तु वे दत्तक पुत्र के रूप में श्री देवीलालजी जैन के यहाँ कोटा आ गये थे। उनमें एक साहित्यकार के गुण कूट-कूटकर भरे हुये थे। इसकारण उन्होंने कई कवितायें भी लिखी तथा उन पर प्रसिद्ध नाटककार एवं कामायनी जैसे महाकाव्य के रचयिता श्री जयशंकर प्रसाद का विशेष प्रभाव था। इसीकारण उनके साहित्य में श्री जयशंकर प्रसाद का प्रभाव देखा जा सकता है।

कम से कम लिखकर अधिक प्रसिद्धि पाने वाले आचार्य उमास्वामी की तरह युगलजी ने भी सीमित साहित्य ही लिखा, परन्तु जो भी लिखा वह अपूर्व है। सबसे पहले छोटी सी उम्र में उन्होंने जो **'केवल रवि किरणों से जिसका संपूर्ण प्रकाशित है अन्तर,**
उस श्री जिनवाणी में होता तत्त्वों का सुन्दरतम दर्शन।
सद्दर्शन बोध चरण पथ पर अविरल जो बढते हैं मुनिगण,
उन देव परम आगम गुरु को शत-शत वंदन शत-शत वंदन।।...'
वाली देव-शास्त्र-गुरु पूजन लिखी, वह आज भी सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज में प्रचलित है। सभी लोग उस पूजन को बड़े भावपूर्वक पढते हैं। उस पूजन में किसी को कोई विवाद नहीं है। उन्होंने जो सिद्ध पूजन लिखी, वह भी पूर्ण साहित्यिक है और पूरी तरह भावपूर्ण है। उसे भी सभी पाठक बड़े चाव से पढते हैं। इसके अतिरिक्त आचार्य अमितगति द्वारा संस्कृत में लिखे सामायिक पाठ का हिन्दी अनुवाद 'नीरव-निर्झर' नाम से किया है, जो अपने आपमें अपूर्व है। इसके अतिरिक्त और भी अनेक छोटी-मोटी कवितायें आपने लिखीं हैं। इस तरह वे उत्कृष्ट लेखक तो थे ही, उत्कृष्ट कोटि के वक्ता भी थे। मैंने उन्हें जयपुर में तो सुना ही है, कोटा में रहते वक्त भी अनेक बार सुना है।

श्रीमद् राजचन्द्र द्वारा रचित गुजराती पद्य का हिन्दी अनुवाद 'अमूल्य तत्त्व विचार' नाम से आपने ही किया है। दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा द्वारा प्रकाशित 'शान्ति सुधा' नामक कृति के ऊपर के भाग में युगलजी द्वारा अनेक सुवाक्य दिये गये हैं, जो मूलत: पठनीय हैं।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अपूर्व व्यक्तित्व के बारे में सुनकर वे सोनगढ गये और उनकी अपूर्व वाणी सुनकर अवाक् रह गये एवं वे गुरुदेव के अनन्य भक्त हो गये।

यद्यपि युगलजी जन्मजात जैन नहीं थे, परन्तु वे भी स्वामीजी की तरह ही दिगम्बर जैनधर्म के स्वरूप एवं महिमा को सुनकर सच्चे शुद्धतेरापंथी दिगम्बर जैन हो गये तथा उन्होंने भी स्वामीजी की तरह मोक्षमार्गप्रकाशक एवं समयसार का एक बार नहीं बल्कि अनेक बार स्वाध्याय किया था।

एक बार की बात है कि युगलजी शिविर के समय सोनगढ नहीं पहुँचे तो गुरुदेवश्री ने पूछा कि इस बार युगलजी क्यों नहीं आये? गुरुदेवश्री को उत्तर मिला कि कोटा में जहाँ बड़े चैत्यालय में युगलजी प्रवचन करते हैं, वहाँ आपका फोटो लगा है, उसे कोई (आपका विरोधी) वहाँ से उतारना चाहता है, तो युगलजी ने कहा कि मेरे जीते जी तो उस फोटो को कोई उतार नहीं सकता। इसीकारण उनका आना भी नहीं हुआ।

जब गुरुदेवश्री ने यह बात सुनी तो उन्होंने बाबूभाईजी से कहा कि तुम जाओ और युगलजी को समझाकर फोटो उतरवा दो। फोटो के कारण झगड़ा नहीं करना चाहिये।

ऐसे सरल स्वभावी थे गुरुदेवश्री कानजीस्वामी और ऐसा था गुरुदेवश्री के प्रति समर्पण की भावना रखने वाला उनका परम प्रिय शिष्य जुगलकिशोरजी 'युगल'।

युगलजी एम.ए. तक पढे थे। उनके समय नाम के साथ शिक्षण की डिग्री लिखने का रिवाज था, उसी परम्परा में युगलजी भी अपने नाम के आगे एम.ए. लिखते थे। हिन्दी साहित्य के इतिहासकार बाबू गुलाबराय एम.ए. भी अपने नाम के साथ एम.ए. लिखते थे।

यद्यपि वे व्यवसाय की दृष्टि से सोने-चांदी का व्यापार करते थे तथापि उनका साहित्यिक जीवन भी अद्भुत था।

एक बार शुद्धात्मप्रकाश के पास युगलजी का फोन आया कि तू बड़े दादा को यात्रा पर क्यों ले गया था, जबकि अभी अभी उनका ऑपरेशन हुआ है। शुद्धात्म ने जवाब दिया कि दादा अब ठीक हैं और जब उन्होंने ही यात्रा में जाने की इच्छा प्रकट की थी तो मैं मना कैसे कर सकता था। आप चिन्ता न करें, मैं दादा को जैसा ले गया था, वैसा ही वापस ले आया हूँ।

शुद्धात्म ने बताया कि युगलजी को दादा से इतना प्रेम था कि यदा-कदा दादा के स्वास्थ्य के बारे में पूछते ही रहते थे।

यद्यपि वे स्वयं अस्वस्थ रहते थे तथा मुझसे 8 वर्ष बड़े थे तथापि उन्हें स्वयं से अधिक हम दोनों भाइयों की फिक्र अधिक रहती थी। वे 91 वर्ष के होकर दिवंगत हुये हैं।

ऐसे थे युगलजी। उनकी क्या-क्या बातें करें। वे महान तो थे ही, साथ ही धर्मात्माओं के प्रति भी उन्हें अधिक प्रेम था। हम भावना भाते हैं कि वे शीघ्र ही मुक्ति प्राप्त कर अनन्त सुखी हों।

– रतनचंद भारिल्ल, जयपुर

बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' : एक असाधारण व्यक्तित्व

– डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

आध्यात्मिकसत्पुरुष पूज्य गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी के भागीरथ प्रयासों से प्रवाहित आध्यात्मिक ज्ञान गंगा में आकण्ठ निमग्न पाँच लाख मुमुक्षु भाई-बहिनों एवं सहस्राधिक प्रवचनकार विद्वानों में आज ऐसा कौन है जो आदरणीय विद्वद्वर्य बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' से परिचित न हो, उनकी देव-शास्त्र-गुरु एवं सिद्ध पूजन से परिचित न हो, उनके प्रवचन सुनकर प्रभावित न हुआ हो, गदगद न हुआ हो।

उनके असामयिक महाप्रयाण से समस्त मुमुक्षु समाज के साथ-साथ हिन्दी जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट और पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन महाविद्यालय के विद्वानों, कार्यकर्ताओं और छात्रों से उनका अगाध स्नेह रहा है। जब तक स्वस्थ रहे, तब तक समय-समय पर उनका मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। प्रत्येक शिविर में तो वे पधारते ही रहे, उनके प्रवचनों का लाभ मिलता ही रहा; प्रशिक्षण शिविरों में भी उनका भरपूर सहयोग निरन्तर मिलता ही रहता था।

महावीर निर्वाण वर्ष में एक अत्यंत सफल प्रशिक्षण शिविर उन्होंने कोटा में स्वयं लगाया था। परम सौभाग्य की बात है कि उनके प्रयासों से उनके प्रति अगाध स्नेह होने से पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी उस शिविर में स्वयं पधारे थे और आठ दिन उसमें रहे थे।

पूज्य गुरुदेवश्री का जिन्हें अगाध वात्सल्य प्राप्त था, उन विद्वानों में एक महत्वपूर्ण नाम जुगलकिशोरजी 'युगल' का भी है।

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति समर्पित उनकी **'लो रोको तूफान चला रे'** शीर्षक की कविता ने एक समय सचमुच तूफान ला दिया था।

यद्यपि हड्डियों का ढांचा उनका शरीर उनका साथ नहीं देता था; तथापि उनकी वाणी का ओज देखने लायक था। यद्यपि वे एकदम दुबले-पतले थे; तथापि महाभाग्य से उन्हें गुरुदेवश्री के बराबर 91 वर्ष 4 माह की उम्र प्राप्त हुई।

एक तो जनसामान्य का इस आयु को स्पर्श कर पाना ही सहज संभव नहीं होता; यदि कोई भाग्यशाली इतनी उम्र पा भी ले तो भी इस उम्र में भी आत्मा के प्रति इतने सजग रहना महान भाग्य की सूचक है।

अन्त तक अत्यंत जागृत अवस्था में आत्मसाधनारत आपका जीवन तो अनुकरणीय था ही, आपने मरण भी समाधिमय प्राप्त किया।

सादा जीवन और उच्च विचार के वे मूर्तिमान रूप थे। उनके रहन-सहन की एक अलग पहिचान थी। एक सादा धोती और अलग टाइप की सादा कमीज मात्र उनकी यही ड्रेस थी, जो अपने आपमें अद्वितीय थी।

उनके वियोग में संतप्त परिवारजनों के प्रति हार्दिक संवेदना के साथ उनसे अनुरोध करता हूँ कि सभी के समान बाबूजी को भी एक दिन जाना ही था। प्रसन्नता की बात है कि वे पूरी सजग अवस्था में गये और सबने उनकी भरपूर सेवा की। मुझे पक्का विश्वास है कि उन्हें निश्चित रूप से सुगति की प्राप्ति हुई होगी। ॐ शान्ति !

डॉ. भारिल्ल के सल्लेखना पर विशेष प्रवचन

जिनवाणी चैनल पर प्रसारित होनेवाले डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों की शृंखला में दिनांक 1 नवम्बर से 'समाधिमरण' विषय पर प्रवचन प्रारम्भ हो रहे हैं।

ये प्रवचन जिनवाणी चैनल पर प्रतिदिन प्रात: 7.00 से 7.30 बजे तक प्रसारित किये जावेंगे।

सुनना न भूलें।

यह जानकारी अपने मित्रों/रिश्तेदारों व परिचितों को भी अवश्य देवें।

डॉ. भारिल्ल के प्रवचन अब टाटा स्काई पर भी

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 7 से 7.30 बजे तक जिनवाणी चैनल पर प्रसारित किये जाते हैं। अब यह चैनल केबल के अतिरिक्त टाटा स्काई के चैनल नं.193, एयरटेल के 684 एवं वीडियोकॉन के 489 पर उपलब्ध है। सभी साधर्मीजन प्रवचनों का अवश्य लाभ लें।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 1 नवम्बर से 'समाधिमरण' विषय पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन प्रारम्भ हो रहे हैं।

बाबूजी का जाना

– राजकुमार शास्त्री, उदयपुर

उज्ज्वल धवल गोत्र में उत्पन्न, उज्ज्वल धवल काया में विलसित, उज्ज्वल कुन्द धवल आत्मा जिसे जुगल किशोर युगल के नाम से जाना गया और जिन्होंने अहर्निश उज्ज्वल कुन्द धवल चैतन्य आत्मा का चिंतन, मंथन, प्रतिपादन और यथाशक्य अनुभवन किया। जिस चैतन्य आत्मा को जिन्होंने चिन्मय, चिरन्तन, चिद्रूप, चिदात्मन, ज्ञाता, चिदेश इत्यादि संज्ञाओं से अभिव्यक्त कर जिसका यशगान किया, जिसे सुनकर भव्यात्मायें मोहनिद्रा से जागकर, मोक्षमार्ग में विहार करने हेतु उल्लसित हो उठते थे।

बाबूजी की वाणी और उनका प्रमेय मोह को समूल नष्ट करता हुआ सा प्रतीत होता था। उनके प्रवचन सुनकर हर श्रोता का हृदय गाने लगता था –'उछलता मेरा पौरुष आज त्वरित टूटेंगे बंधन नाथ।'

बाबूजी एक मात्र ऐसे प्रवक्ता थे जो एक ओर अध्यात्म की घनघोर वृष्टि करके अनादि के ताप का शमन करते थे तो दूसरी ओर अज्ञानता से चली आ रही गलीच प्रवृत्तियों पर प्रहार कर प्रमादचर्या को छुड़ाकर श्रावक के योग्य आवश्यक शुभभाव व शुभ प्रवृत्तियों की स्थापना भी करते थे।

बाबूजी की लेखनी ने अध्यात्म में साहित्य व साहित्य में अध्यात्म का अनोखा सुमेल प्रस्तुत किया। बाबूजी का लेखन उद्धरण शून्य रहता है परन्तु पाठक एक-एक पंक्ति में अनेकों ग्रन्थों की गाथाओं को देख पाते हैं। वे सम्पूर्ण विषय को आत्मसात कर गद्य को भी पद्य की भावानुभूति द्वारा प्रस्तुत करते थे जो उनकी विलक्षण प्रतिभा का परिचायक है।

एक ओर जहाँ वह व्यवहार का एक सहयोगी के रूप में निरूपण करते वहीं अनावश्यक या भूमिका के ऊपर के त्याग का निषेध भी करते। वे कहते थे कि भूमिका से ऊपर का त्याग आपको स्वयं को व अन्य को भी विशिष्टता की कोटि का भ्रम कराता है, जिसके कि आप योग्य नहीं हैं।

बाबूजी गुरुदेवश्री व बहिनश्री द्वारा स्थापित ब्रह्मचर्य आदि की परम्पराओं के प्रति अत्यधिक सावधान रहते/करते थे। उनकी सदैव भावना रहती थी कि गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित तत्त्वज्ञान कभी मलिन हाथों में पहुँच कर मलिन नहीं होना चाहिये, अत: वक्ता के तत्त्वज्ञान व सदाचरण के प्रति वे सदैव सजग रहते/करते थे।

वर्षों से बाबूजी अधिक अस्वस्थ थे व उम्र के कारण भी शारीरिक कमजोरी रहती थी, परन्तु जब किसी के साथ भी शुद्ध आत्मतत्त्व की चर्चा में मग्न होते थे, तो पता ही नहीं चलता था कि यह बीसों वर्षों से माइग्रेन से परेशान, वर्षों से बिस्तर पर रहने वाले, 90 वर्ष का व्यक्तित्व है, उनकी वाणी से ऐसा निश्चय होता कि आत्मा सच में ही शरीराश्रित नहीं है।

बाबूजी का जाना, एक ज्ञायक भाव के जोरदार निरूपणकर्ता, विद्वानों में अतिशय वात्सल्यभाव रखने वाले, निश्चय-व्यवहार की संधिपूर्वक विवेचनकर्ता, गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान के प्रति निष्ठावान, जिन सिद्धांतों को स्वीकार किया है उस पर न झुकनेवाले, दृढ परन्तु विनम्र ऐसे अतिविलक्षण महामानव का जाना हुआ है, जिसे हम इस जीवन में पुन: प्राप्त नहीं कर सकेंगे और निश्चित ही आगे आने वाली पीढियाँ हम पर ईर्ष्या करेंगी और स्वयं के विलम्ब से जन्म लेने पर खेद। बाबूजी का जाना एक अध्याय का समापन है जो/जैसा अब फिर नहीं लिखा जा सकेगा।

मुझे सौभाग्य से लगभग 5 वर्ष उनके नजदीक रहने उन्हें देखने-सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। क्षयोपशम की कमी से निश्चित ही मुझे जितना ग्रहण करना चाहिये था नहीं कर सका; पर उनका व उनके परिवार का मुझे व मेरे परिवार को बहुत वात्सल्य मिला है, जिसे कभी विस्मृत नहीं कर सकते।●

कुछ संस्मरण...

– ब्र. यशपाल जैन

बाबू श्री युगलजी का सर्वप्रथम नजदीकी से परिचय जब कोटा नगर में ई.सन् 1975 को प्रशिक्षण शिविर चला था, तब हुआ था। गर्मी/धूप सहन न होने के कारण मैं अधिक बीमार हो गया था। दक्षिण प्रान्त से (सांगली-कोल्हापुर से) मैं अकेला शिविर में आया था। श्री युगलजी साहब शिविर की सब व्यवस्था देखते थे। अधिक व्यस्तता होने पर मुझे सुबह-शाम मिलते थे और व्यवस्था करते थे। मैं उनसे तभी से विशेष प्रभावित हूँ।

उनकी भाषा-शैली भी मुझे सर्वोत्तम लगती है। प्रत्येक शब्द के अत्यंत स्पष्ट उच्चारण से मैं प्रभावित हूँ।

देव-शास्त्र-गुरु पूजन की एक पंक्ति ने मुझे अधिक प्रभावित किया है, वह है –''जड़ कर्म घुमाता है मुझको यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी; मैं रागी द्वेषी हो लेता जब परिणति होती है जड़ की।''

एक वर्ष दशलक्षण पर्व में मैं कोटा गया था, उस समय वे श्रोता बनकर बैठते थे। इसकारण मुझे संकोच भी होता था। मैंने समयसार की छठी गाथा पर प्रवचन किये थे। श्री युगलजी बोले –''आपको शुद्धात्मा की महिमा आ गई है – यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई है।''

आपको श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के प्रति बहुत-बहुत प्रेम था। डॉ. भारिल्ल के कार्य के वे प्रशंसक रहे। इसकारण कुछ लोगों को तकलीफ भी थी।

कोई भी सामान्य वक्ता अथवा महाविद्यालय का विद्यार्थी कोटा पहुंच जाता तो वे उनके श्रोता बनते थे और सेवा/व्यवस्था करने में जुट जाते थे।

जयपुर में लगने वाले शिविर में पहले तत्त्वचर्चा के लिये 1 घंटा निश्चित था। उनसे श्रोता ने प्रश्न पूछा – ''हमें समयसार में कथित शुद्धात्मा तो सत्य लगता है, लेकिन द्वीप, समुद्र, स्वर्ग, नरक इन विषयों की सत्यता पर शंका होती है – हम क्या करें ? श्री युगलजी ने समाधान में स्पष्ट किया– ''जिसे स्वर्ग, नरक, द्वीप-समुद्र की बात असत्य लगती है, उसको शुद्धात्मा भी वास्तविक सत्य नहीं लगता।''

श्री युगलजी को तत्त्वप्रचार करने का परिणाम उतना तीव्र नहीं था, जितना समाज चाहती थी। उनका साहित्य बेजोड़ है। उनके स्वर्गवास के कारण मुमुक्षु समाज की जो हानि हुई है, उस क्षति की पूर्ति होना असंभव है।

उनको शीघ्र ही मोक्षमहल में स्थान मिले यही – मंगल भावना है।●

युगलजी के प्रति....

– अखिल बंसल, जयपुर

छोटा कद दुबली सी काया, राग-द्वेष नहिं किंचित भाया
समयसार का मर्म बताने, जुगलकिशोर धरती पर आया।
सदा सजग अपने में रहते, आत्मसाधना में नित रमते
गुरुप्रसाद की धूम मचाने, कुन्दकुन्द का अलख जगाया।
धीर वीर गंभीर रहे नित, वचन बोलते जग में हित मित
सदा सभी के प्रेरक बनकर, पाखण्डों से किया किनारा।
महाक्रान्ति के तुम उद्घोषक, वीतरागता के थे पोषक
उदित हुये ध्रुवतारा बनकर, मुक्ति मार्ग का पथ बतलाया।
अध्यात्मक्रान्ति के सजग प्रणेता, जैनागम के गहन अध्येता
'अखिल' विश्व सुरभित है तुमसे, जिस पर तुमने जीवन वारा।

वात्सल्य की प्रतिमूर्ति बाबूजी का चिरवियोग

– शान्तिकुमार पाटील, जयपुर

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा प्रचारित आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान को अपने जीवन में उतारकर उसे सशक्त शब्दों में अपनी वाणी और लेखनी से जन-जन तक पहुँचाने में जिनका अभूतपूर्व योगदान रहा - ऐसे बाबू जुगलकिशोरजी युगल के देहविलय से समग्र मुमुक्षु समाज को एक अपूरणीय क्षति हुई है।

'केवल रवि किरणों से...' देव-शास्त्र-गुरु पूजन एवं 'निज वज्र पौरुष से प्रभो...' सिद्ध पूजन लिखकर जो जैन जगत में चिर-स्मरणीय हो गये। कम से कम लिखकर अधिक से अधिक प्रसिद्धि पाने वाले बाबूजी जैसे व्यक्तित्व विरल ही होते हैं।

उनकी काया कृश व दुबली-पतली थी; परन्तु उनका तत्त्वाभ्यास-तत्त्वचिन्तन ठोस था। आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा प्रतिपादित अध्यात्म के प्रति निष्ठा गहरी थी और इसी कारण वाणी में भी दृढता थी। अस्वस्थता के दिनों में भी तत्त्वचर्चा करते समय निकलने वाली उनकी बुलन्द वाणी प्रत्येक सुननेवाले को आश्चर्यचकित करती थी।

साधर्मीवात्सल्य की प्रतिमूर्ति बाबूजी का मेरे प्रति विशेष स्नेह मैं अनुभव करता था। मैं ही नहीं, प्रत्येक मुमुक्षु भी निश्चित ही उनके इस साधर्मी वात्सल्य से अभिभूत था।

'चैतन्य का ही स्मरण प्रतिक्षण करो रे, भव के अनंत दु:ख को क्षण में हरो रे.....' इसप्रकार शुद्धात्मा के ही निरंतर गीत गाने वाले बाबूजी शीघ्र परमात्मपद को प्राप्त हों - यही मेरी भावपूर्ण श्रद्धांजलि है। ●

छोड़ गये यह लोक अरे !

– अभयकुमार जैन, देवलाली

सुरतरुओं के फल-साक्षी में शिवपथ का उद्घाटन कर।
छोड़ गये यह लोक अरे! बाबूजी हम सबके प्रियवर।।
गुरु कहान का स्वर्ण समागम जिनके जीवन का दर्शन।
कोने-कोने में ध्रुव बसता दिखलाया सम्यग्दर्शन।।1।।
रचनाओं में सदा विराजें कैसे मानें चले गये ?
ज्ञान तरंगों में जो उछले शुद्ध आत्मा दिखा गये।।
निज गुण अर्घ्य बनाकर करते देव-शास्त्र-गुरु को वन्दन।
निज अन्तर्वैभव की मस्ती से सिद्धों का अभिनन्दन।।2।।
चहल-पहल चेतन की जिनकी वाणी में वर्ते अविराम।
सदाचरण की पुष्प वाटिका जीवन में महके अभिराम।।
निष्काम प्रवाहित हर हिलोर से करते सिद्धों का गुणगान।
केवल्य कला को नित्य निरखता था उनका निर्मल श्रुतज्ञान।।3।।
नित्य उछलता जिनका पौरुष निज को सदा निरखते मुक्त।
अरे प्रभु की सुख शैय्या में विचरण करते हो उन्मुक्त।।
करें कहाँ तक गुण वर्णन हम क्योंकि न होता पूर्ण विराम।
श्रद्धा के ये सुमन समर्पित चरण-युगल में करूँ प्रणाम।।4।।

ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण मोक्षमार्गप्रकाशक का विमोचन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जौहरी बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर में दिनांक 2 अक्टूबर को पण्डित टोडरमलजी द्वारा हस्तलिखित मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ की ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण मूलप्रति के विमोचन समारोह का कार्यक्रम संपन्न हुआ। लगभग 500 पृष्ठीय इन ताम्रपत्रों का कुल वजन 103 कि.ग्रा. है। ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ अब हजारों वर्षों के लिये सुरक्षित हो गया है।

इस प्रसंग पर प्रात: श्रुतस्कंध विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर आयोजित सभा में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा पण्डित टोडरमलजी के संबंध में अनेक मार्मिक पहलुओं को स्पर्श करते हुये मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

पण्डित टोडरमलजी की कार्यस्थली इस दिगम्बर जैन मंदिर का परिचय श्री विनयजी पापड़ीवाल ने दिया। साथ ही पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला।

इस अवसर पर मन्दिर कमेटी द्वारा ताम्रपत्र ग्रन्थ के उत्कीर्णकर्ता पण्डित मनोजजी जैन मुजफ्फरनगर (चीनी वाले) का सम्मान किया गया। पण्डित मनोजजी द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर एवं दीवान भधीचंदजी के मंदिर को इस ग्रन्थ का प्रतीक स्मृति चिह्न भेंट किया गया। कार्यक्रम में लगभग 400-450 साधर्मीजन उपस्थित थे।

सभा में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के अतिरिक्त पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. एस.बी. पापड़ीवाल, डॉ. सुरेन्द्रकुमारजी शाह दीवान, श्री निहालचंदजी जैन पीतल फैक्ट्री, श्री शांतिलालजी अलवरवाले, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल एवं श्रीमती गुणमाला भारिल्ल की गरिमामयी उपस्थिति रही।

समस्त अतिथियों का सम्मान श्री कांतिकुमारजी गंगवाल, श्री महेन्द्रकुमारजी गोधा, श्री विजयकुमारजी सौगानी, श्री ओमप्रकाशजी जैन एवं श्री सुशीलजी जैन द्वारा किया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने किया।

विद्वत्परिषद् के पुरस्कार घोषित

जयपुर (राज.) : यहाँ अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् की ओर से आगम अध्यात्म प्रवचन व लेखन के क्षेत्र में अग्रणीय भूमिका के लिये जैन आगम के मनीषी विद्वान **डॉ. पी.सी. रांवका, जयपुर** को गुरु गोपालदास वरैया विद्वत्परिषद् पुरस्कार, **ब्र. हेमचन्दजी 'हेम', देवलाली** को गणेशप्रसाद वर्णी विद्वत्परिषद् पुरस्कार एवं युवा विद्वान **डॉ. संजीवकुमार गोधा, जयपुर** को पण्डित टोडरमल विद्वत्परिषद् पुरस्कार देने का निर्णय किया गया है। ये पुरस्कार निर्णायक समिति के निर्णयानुसार 24 अक्टूबर को होने वाले अधिवेशन में दिये जायेंगे।

विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंद भारिल्ल ने पुरस्कारों के निर्णय की घोषणा करते हुये पुरस्कृत विद्वानों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

– अखिल बंसल, महामंत्री

जगाया तुमने कितनी बार...

– डॉ. राकेश शास्त्री, नागपुर

'तुम चिरन्तन...मैं लघुक्षण'- इन काव्य-पंक्तियों के माध्यम से प्रभु की अतिशय महिमा एवं स्वयं की अतिशय लघुता की मानो अभिव्यक्ति करने वाले बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' का जीवन श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र का त्रिवेणी-संगम था। जहाँ उनका जीवन आस्थापूर्ण दृढ विश्वास से सुशोभित था, वहीं आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान से सुरभित भी था; उसी प्रकार सदाचारमय सम्यक्त्वाचरण-परिणति से सज्जित भी था।

चारित्रपाहुड में वर्णित सम्यक्त्वाचरण-चारित्र के अंगभूत नि:शंकित-नि:कांक्षित-निर्विचिकित्सा-अमूढदृष्टि-उपगूहन-स्थितिकरण-वात्सल्य-प्रभावना आदि प्रत्येक अंग के आप मूर्तिमान बिम्ब ही थे।

उनकी निर्भयता, उनकी निस्पृहता, उनका सेवाभाव, उनकी दृढता, उनका अनिंद्यस्वभाव, उनकी परोपकारिता, उनका साधर्मी-प्रेम, उनकी जिनधर्म-प्रभावना आदि सबकुछ अनुकरणीय ही नहीं, उदाहरणीय भी थे।

इसीप्रकार जिनोक्त प्रशम-संवेग-अनुकम्पा-आस्तिक्य आदि गुण भी आपमें कूट-कूटकर भरे थे। अन्य गुणों में विनय-सुदानदक्षता-मार्गप्रशंसा-उपबृंहण-जीवरक्षा-उत्साह-भावना-श्रद्धा आदि के आप भंडार थे।

उनकी रचनाओं में 'पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी और उनका जीवन-दर्शन' ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया, वह भी आज नहीं, बल्कि 40 वर्ष पूर्व, जब मैं मात्र 16 वर्ष का था; समझ में नहीं आने से मैंने उसे एक बार नहीं, बीस बार बढा, जब तक कि वह आत्मसात नहीं हो गया।

इस लेख ने जहाँ पूज्य गुरुदेवश्री से परिचित कराया, वहीं सम्यग्दर्शन से भी; इतना ही नहीं बाबू युगलजी के व्यक्तित्व एवं गाम्भीर्य का परिचय भी इसी लेख के माध्यम से मिल जाता है।

मेरी यह तीव्र भावना है कि आ.बाबूजी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर शोधकार्य अवश्य होने चाहिये, जिससे उनके चिन्तन का लाभ समूची पृथ्वी को प्राप्त हो सके। उनका समग्र चिन्तन, उनके ऑडिया-वीडियो प्रवचनों में अन्तर्गर्भित हैं, जिसका उपयोग शोधकार्य में किया जा सकता है।

मेरे प्रति उनका अति वात्सल्यभाव था, वे हमेशा मेरा मार्गदर्शन करते रहते थे, मेरी अनेक बड़ी-बड़ी गलतियों को वे पी जाते थे, उनके वात्सल्य में रंचमात्र भी अन्तर नहीं आता था।

एक बार जयपुर में मैं उन्हें छोटी-सी मोपेड गाड़ी पर बाजार ले जा रहा था, उस समय मेरी असावधानीवश वे गिर गये थे, जिससे उनकी गर्दन पर विशेष चोट आई थी। एक वर्ष बाद जब मैंने इस घटना को याद किया तो वे हास-परिहास में बोले - 'सब, तेरी ही कृपा है।' मैं अपने इस दुष्कृत्य के लिये आज भी अपने को कोसता रहता हूँ और उनसे पुन:-पुन: आज भी क्षमाप्रार्थी हूँ।

अभी-अभी मात्र एक माह पूर्व भाईसाहब अभयजी, विरागजी, अरुणजी मोदी आदि महानुभावों के साथ हमने सपरिवार उनसे प्रत्यक्ष भेंट की थी। पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के संबंध में उनके संस्मरणों को सुरक्षित रखने का यह एक प्रयास था। उस समय उनसे एवं उनके परिवार से दो दिनों के दो सत्रों में लगभग 3 घण्टे चर्चा हुई थी। उस समय उनकी चेतना अत्यन्त व्यवस्थित एवं प्रफुल्लित थी। उन्होंने हमारे एक-एक प्रश्न का उत्तर अपनी सम्पूर्ण चेतना से दिया था।

यद्यपि उन्होंने अपने जीवन के 91 वसन्त देखे, मानो पूज्य गुरुदेवश्री के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हों; क्योंकि गुरुदेवश्री ने तो मात्र 90 बसन्त ही देखे थे। माने गुरुदेव का वियोग, उनसे सहन नहीं हो रहा था; अत: वे भी उनसे मिलने स्वर्ग-लोक में प्रस्थान कर गये।

मैं अपने सम्पूर्ण अन्तर्मन से उनके प्रति अपनी विनयांजलि सम्प्रेषित करता हूँ, उनको परोक्ष प्रणाम करता हूँ। वे शीघ्र ही मुक्ति-रमा को वरण करेंगे, इसमें मुझे रंचमात्र भी संशय नहीं है। अस्तु। ●

परिकल्पना

– ऋषभ शास्त्री, उस्मानपुर, दिल्ली

मानो बाबू 'युगलजी' आज अपने भाव कुछ इसप्रकार व्यक्त कर रहे हों -
जग में जिसको निज कहता मैं, वह छोड़ मुझे चल देता है। **अथवा**
मेरे न हुये ये मैं इनसे अति भिन्न अखण्ड निराला हूँ। **इसलिये**
हम छोड़ चले यह लोक तभी, लोकान्त (देशांत) विराजे क्षण में जा। **अब**
चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी।
जब में न हमारा कोई था, हम भी न रहें जग के साथी।। **मात्र**
निज लोक हमारा वासा हो...बस ज्ञाता दृष्टा रह जाऊँ ...
प्रस्तुत पंक्तियाँ इशारा करती हैं उनके शुद्धात्म तत्त्व को पाने का
''उछलता मेरा पौरुष आज, त्वरित टूटेंगे बंधन नाथ।
अरे तेरी सुख शय्या बीच, होगा मेरा प्रथम प्रभात।''
वे तो इस पर्याय में अपना कार्य कर गये। मेरा भी अनादि का अधूरा कार्य प्रारम्भ हो - इस प्रबल भावना से ही उनको श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।

चैतन्य चितेरे - बाबूजी

– डॉ. अरविन्द शास्त्री सांगानेर, जयपुर

चिन्मयी चेतना के उद्गम, शान्ति सुधा के थे प्रतीक।
वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, दृष्टि विषय था सटीक।।
चैतन्य विहारी निखिल विश्व में, वज्रमयी सी थी टंकार।
पाखंडों का महल हिल गया, बही जब अध्यात्म बहार।।
विद्वत्गण के थे मूर्धन्य, साधर्मियों के थे आदर्श।
सजग प्रहरी मुमुक्षु समाज के, संस्थाओं के दिग्दर्श।।
शीघ्र वरें शिवरमणी वधु को, यही कामना करते हैं।
अश्रुपूरित द्रवित हृदय से, श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।।

युगलजी को श्रद्धा सुमन अर्पण...

– चैतन्यधाम, अहमदाबाद

चैतन्य तत्त्व के आराधक, शुद्धात्मतत्त्व के प्रतिपादक, शांतिमूर्ति - आपके देह विलयरूपी चिर वियोग के वैराग्य संदेश को सुनकर संसार की क्षणभंगुरता का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ। आप पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की चन्द्र आभा की शीतलता के निकट चमकते ध्रुवतारे थे। गुरुदेवश्री के सान्निध्य में रहकर मिथ्यात्व पर वज्रप्रहार करने की कला सीखकर आपका संपूर्ण जीवन चैतन्य वाटिका में रहकर चैतन्य विहार करते हुये व्यतीत हुआ।

गुरुदेवश्री की अध्यात्म वाणी की दिशा मिलते ही आप अध्यात्म के रंग में रंगते हुये पूजन, काव्य संग्रह चैतन्य-वाटिका एवं गद्य विधा चैतन्य विहार में साहित्य व अध्यात्म के समावेश से जैन जगत को नया आयाम मिला।

मुमुक्षु समाज की अमूल्य निधि की पूर्ति पुन: असंभव है, परन्तु आप मुमुक्षुओं के चित्त में सदैव अमर रहेंगे।

अटूट देव-शास्त्र-गुरु के प्रति श्रद्धा, सतत अपनी परिणति में अपनी आत्मा का चिन्तवन करने वाले युगनायक को बारंबार नमन।

चैतन्यधाम परिवार एवं समस्त दि. जैन मुमुक्षु समाज यह भावना व्यक्त करता है कि आप मनुष्य पर्याय प्राप्त कर निर्ग्रन्थ भावना भाकर अल्पकाल में निज चैतन्य को प्राप्त करें इन्हीं भावनाओं के साथ पुन: युगनायक बाबूजी को नमन।

मिथ्यात्व पर वज्र प्रहार करने वाले

– डॉ. संजीवकुमार गोधा, जयपुर

अध्यात्म जगत के मूर्धन्य, शीर्षस्थ विद्वान बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' का चिरवियोग सम्पूर्ण मुमुक्षु जैन समाज के लिये गुरुदेवश्री के पश्चात् सबसे बड़ी अपूरणीय क्षति है। गुरुदेवश्री से प्राप्त आचार्य कुन्दकुन्द की अमृत वाणी के मर्म का उन्होंने भरपूर रसास्वादन किया। आज वे हमारे बीच में भले ही नहीं रहे; किन्तु मिथ्यात्व पर वज्र प्रहार करने वाली मेघगर्जरा के समान उनकी ओजस्वी प्रखर वाणीरूप सैंकड़ों प्रवचन एवं उनकी लेखनी से प्रस्फुटित अमृत वचन हमारे पास उपलब्ध हैं, जो इस पंचम काल के अंत तक आत्मार्थियों के कल्याण में निमित्त बनते रहेंगे। आपकी लेखनी से लिखा गया प्रत्येक वाक्य युगों-युगों तक आत्मकल्याण चाहने वाले साधर्मियों के लिये पथप्रदर्शक बना रहेगा।

मुझे आज भी स्मरण है आज से 26 वर्ष पूर्व 5 अक्टूबर 1989 को सम्मेदशिखरजी शिविर के अवसर पर दिया गया आपका वह पौने दो घंटे का क्रांतिकारी प्रवचन। उस समय के अनेकों वाक्य आज भी मेरे हृदयपटल पर हूबहू अंकित हैं। जिस समय पूरा भारत रामायण और महाभारत जैसे टी.वी. सीरियलों को मन्त्रमुग्ध होकर देखता था, इन सीरियलों के समय हिन्दुस्तान की सड़कें ऐसे खाली होती थीं; मानो कर्फ्यू लग जाता हो। ऐसे समय में हजारों श्रोताओं के बीच इसे देखना अश्लील फिल्म देखने से भी बड़ा पाप बताना अथवा गृहीत मिथ्यात्व कहकर इन्हें देखने का दृढता से निषेध करना आपके व्यक्तित्व की अत्यंत निर्भीकता को बताता है। आपके उस प्रवचन ने चित्त को इतना प्रभावित किया कि दूरदर्शन देखने का रस छूट गया। और लगभग 13 वर्षों तक घर में रखी टी.वी. का स्विच भी ऑन नहीं हुआ। इस प्रवचन में उन्होंने पूजन, भक्ति, आरती, धूप चढाना आदि अनेक धार्मिक क्रियाकांड संबंधी मूढताओं पर कुठाराघात किया। भक्ति में तालियाँ बजाना, महिलाओं एवं पुरुषों का नृत्य करना, रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के निषेधरूप सदाचार एवं मुमुक्षु की सम्यक्त्व प्राप्त करने हेतु पात्रता संबंधी अनेक बातों ने मुझे बहुत प्रभावित किया।

उसके पश्चात् सन् 1990 से 1994 के बीच आपके प्रत्यक्ष परोक्ष सैंकड़ों प्रवचनों का लाभ लिया तथा अनेक प्रवचनों को कैसेट से अपने हाथों से कॉपियों में पूरा का पूरा आद्योपान्त उतारा। आपके द्वारा बोले गये वाक्य हृदय पर अमिट छाप छोड़ते थे।

सन् 1998 में दशलक्षण पर्व पर टोडरमल स्मारक में मेरे द्वारा किये गये समयसार पर प्रवचनों के कैसेट बाबूजी ने कोटा में सुने। तब से मेरे प्रति उनका वात्सल्य विशेष हो गया। उनके आग्रह पर ही 2005 में दशलक्षण पर्व रामपुरा-कोटा में हुआ। तब प्रतिदिन उनके साथ होने वाली आध्यात्मिक चर्चाओं ने उनके अत्यंत निकट ला दिया। इसी दौरान उनके द्वारा दशलक्षण व पर्यूषण शब्द की भिन्नता का विशेष बोध हुआ। जब इस पर्यूषण शब्द को जैनेन्द्र सिद्धांत कोश एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की 'धर्म के दशलक्षण' पुस्तक में खोजा तो कहीं न मिला। उसके बाद जीवन में कभी भी दशलक्षण के लिये पर्यूषण शब्द का प्रयोग नहीं किया।

आपके द्वारा सन् 1950 में लिखी देव-शास्त्र-गुरु पूजन ने तो पूजन साहित्य के इतिहास में क्रांतिकारी परिवर्तन की शुरुआत की। पण्डित द्यानतरायजी एवं पण्डित वृन्दावनदासजी द्वारा लिखित पारम्परिक पूजाओं के बीच अध्यात्म रस से सराबोर आपकी देव-शास्त्र-गुरु पूजन ने पूजन साहित्य को आध्यात्मीकरण के लिये एक नई दिशा प्रदान की। मैं उन्हें पूजन साहित्य में आध्यात्मिक क्रांति का जनक कहूँ, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी; क्योंकि इस पूजन के पश्चात् ही समाज में भारिल्लजी, पवैयाजी आदि अनेक विद्वानों द्वारा आध्यात्मिक पूजायें रची गईं।

आपका वस्तु तत्त्व को प्रतिपादन करने वाला चिंतन और तर्क भी अभूतपूर्व हुआ करते थे। यथा मिथ्यात्वी की दृष्टि मिथ्या है, वह आत्मा को अशुद्ध और विकारी देखता है। चूंकि यह दृष्टि मिथ्या है, इसलिये भी आत्मा शुद्ध और निर्विकारी ही सिद्ध होता है। बाबूजी की दृष्टि एवं चिन्तन बहुत सूक्ष्म एवं अलौकिक था।

वे मोक्षमार्ग को अत्यंत संक्षेप में इसप्रकार कहा करते थे –

देह और आत्मा का पृथक् बोध कर लो।
बाकी ज्ञान पेटी में बंद कर धर लो।।
यही मोक्षमार्ग, यही मोक्ष, यही रत्नत्रय।
जीवन की एक कला जल्दी से सीख लो।।

इसप्रकार आत्मार्थियों को 2 पंक्तियों में अलौकिक जीवन जीने की कला सिखाने वाले बाबूजी स्वयं अपने आप को देह से भिन्न अनुभव करते थे। वे अस्वस्थ नहीं थे, वे सदा स्व में स्थित रहते थे; अत: स्वस्थ थे। देह की अस्वस्थता उनकी नहीं थी, वे भीतर से स्वस्थ थे। शारीरिक अस्वस्थता के काल में भी मैं जब जब उनसे मिला, वे मुझे भीतर से, अंतरंग से स्वस्थ नजर आये। देह की अस्वस्थ परिस्थिति में भी उनकी वाणी से सदा उसी शुद्ध चैतन्य तत्त्व की चर्चा दृढता से निकलती थी, जिसका वे रसास्वादन करते थे।

उन्होंने गुरुदेवश्री से प्राप्त तत्त्वज्ञान को आत्मसात कर अपने मनुष्य पर्याय के प्रत्येक क्षण को स्वयं सार्थक तो किया ही था, साथ ही वे समाज के लिये अपने लेखन एवं वाणी के माध्यम से अमूल्य निधियाँ छोड गये। वह इस जगत के लिये धरोहर है। उनकी इस आध्यात्मिक धरोहर का सार्थक उपयोग कर परिवारजन एवं हम सभी मुमुक्षु आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर हों – यही उनके प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि होगी। ●

अध्यात्मयोगी बाबूजी

– राजेश जैन शास्त्री, शाहगढ

अध्यात्म मनीषी श्रद्धेय बाबू युगलजी के महाप्रयाण से अध्यात्म जगत का विचलित हो जाना स्वाभाविक ही है, क्योंकि आपके द्वारा सर्वज्ञ शासन की वर्षों तक जो अनवरत धर्मप्रभावना की जा रही थी, उस पर विराम जो लग गया।

आपके देह वियोग से मुमुक्षु जैन समाज इसलिये भी शोकाकुल शोक संतप्त हो गया, क्योंकि अत्यंत मार्मिक, हृदयग्राही प्रवचनों के द्वारा जिनशासन की प्रभावना का शंखनाद करने वाली वाणी का हमेशा के लिये विरह जो हो गया।

मुझे सर्वप्रथम आपका परिचय और प्रवचनों का लाभ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में प्रवेश लेने के उपरान्त 1994 में प्राप्त हुआ। आत्मा के स्व-पर प्रकाशक स्वभाव पर हुये आपके मार्मिक प्रवचनों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। आपका शांत चेहरा, ओजस्वी वाणी और तत्त्वज्ञान के प्रति समर्पित जीवन मेरे लिये अपूर्व प्रेरणा का स्रोत रहा है और आज भी है। ऐसे अध्यात्मयोगी 'बाबूजी' को कोटिश: नमन। ●

नानाजी की स्मृतियाँ

– ज्ञाता झांझरी (उज्जन), सूरत

चैतन्य की चहल-पहल से उत्पन्न ''मेरी पहली अनुभूति जगी' कहने वाले बाबूजी के भवबंधन तड़-तड़ टूटने के क्रमबद्ध में इस मृत्यु की बहरी बाला का आना, उनके लिये तो अभिषाप के रूप में आने वाला वरदान का स्वर्णिम फूल ही था... असाता की विभावरी जो बीत चली थी।

बाबूजी की रचनाओं को पढकर अपनी ओर मंगलमय करने वाला यह समाज उनकी उपकार गाथा गाता रहा किन्तु उन्हें तो गाथा आत्मज्ञान की ही सुहाई थी। कहते 'इन रचनाओं का श्रेय मुझे नहीं, पौद्गलिक शब्दों को है।'

अरे ! जिस महापुरुष ने गुरुदेवश्री के अणु-अणु की आजादी के शंखनादी तूफान को शिराधार्य किया हो उसे गर्म और ठंडी श्वासें यह पुण्य-पाप की कैसे विचलित कर सकती थीं। बाबूजी को तो मिट्टी को समर्पित जीवन जीने वालों पर विस्मय होता था, क्योंकि उन विश्वासों की कोई धरती कोई गगन नहीं होते....तो फिर तुम्हें इस धरा पर इस जड़ता से इतना प्यार क्यों है ? और यदि है तो फिर तुम्हें चेतन बनने का क्या अधिकार है ? बाबूजी पूछते ही चले गये.....।

अध्यात्म के गूढ टेढे-मेढे प्रश्नों का हल भी दिव्य दो-टूक शब्दों में पाकर मानो नि:शंक अंग मिलता हो तथापि बाबूजी कहते ''ये शब्द अपने कालक्रम में स्वयं निर्झरित हुए हैं, मुझे इसका किंचित मान नहीं।''

आत्मोपलब्धि कभी शरीराश्रित नहीं होती। सूखी देह, नसें भी सूखी और हड्डियों का ढांचा तन होने पर भी केवल रवि किरणें उनके निर्मल ज्ञान-आनन्द की परिचायक रहीं।

अंतिम वर्षों में शारीरिक शिथिलता भी उन्हें दैनिक व्यवहार देव-दर्शन, पूजन आदि से वंचित न रख सकीं...कई बार शुभ लक्षण प्रगट होते...समवशरण और दिव्य मनोज्ञ प्रतिमाओं के दर्शन सहज ही हो जाते और निर्बल भुजाएं नमन हेतु सम्मिलित हो जातीं...सहसा जयजयकार करते ...

''यह सब सच है किन्तु बड़ी यह बात नहीं है।
रे विभूति तो सदा पुण्य की दास रही है।''

एक दिव्य पुरुष अपने प्रभु के दर्शन हेतु इस देह के भरोसे भला क्यों रहे ? और यदि सभी काम करने से ही होगा तो स्वचलित प्रकृति क्या ग्रंथों में मात्र प्रदर्शन की वस्तु है ?

पूज्य बाबूजी की इन प्राणदायक स्मृतिरूपी संजीवनी से भी अमर हुआ जा सकता है, क्योंकि स्मृति भी महान होती है, वे कभी लब्धि बनकर प्रज्ञा जलज खिला देती है तो कभी कुरीतियों और रूढी के विराट महलों को भी अपनी उग्र तपिश से खण्डहर बना देती है। स्मृति अंधे को भी राह दिखा देती है, स्मृति योगी को अपने स्वरूप की विस्मृति से परे रखती है.....स्मृतियाँ ही तो शेष रही हैं अब बाबूजी की, किन्तु क्या वे स्मृतियाँ अज्ञान, कषाय, कुरीति और अन्याय पर वज्रपात नहीं है ?

वैश्विक भोग-विलासों से दूर अपने आपको उछलते पौरुष से सल्लेखना के द्वारा नवजीवन के सिंहासन पर आरूढ करने वाले महामना का स्मृति इतिहास ही क्रियाकांडी महत्वाकांक्षियों के मुख की क्षणिक जड़ कांति को हर लेने वाला है।

मेरे पूज्य नानाजी होने के कारण उनकी शिक्षा, प्रेम और वात्सल्य का वर्षण होता रहा था....जो स्मृति रूप में ज्ञान पेटी में बंदकर धर ली है, उनके अभिसिंचन से जीवन में शांति लतायें छा जायें ऐसी मैं कामना करता हूँ।●

बाबूजी के अन्तिम क्षण

– नागेश जैन, पिड़ावा

आज संपूर्ण जैन जगत और साहित्य जगत आ.बाबूजी से उपकृत है, यह तो उनका लोकेषणा से दूर रहने का गुण ही है कि उन्होंने मात्र आध्यात्मिक रचनाओं को ही अपने घर में जगह दी अन्यथा जानकार उनकी लौकिक रचनाओं को भी कामायनी के तुल्य श्रेष्ठ बतलाते हैं।

आ. बाबूजी के दामाद, हमारे गुरु एवं ट्रस्ट के अध्यक्ष पण्डित प्रदीपजी झांझरी जीवनपर्यन्त बाबूजी के अतिनिकट रहे एवं उज्जैन में प्राय: प्रवचन-चर्चा में उनसे जुड़ी स्मृतियों को और आध्यात्मिक वाक्यों को समाविष्ट करते रहे हैं। वे बाबूजी के अंतिम क्षणों के भी साक्षी रहे .... उत्सुकतावश मैंने उनसे पूछ लिया 'क्या करते थे बाबूजी अंतिम क्षणों में ?' तो उन्होंने कहा 'जब मुझे बाबूजी का अंतिम समय प्रतीत हुआ तब मैंने उनकी प्रिय समयसार की छठी गाथा कह सुनाई .... वे तुरन्त ही ऐसी उग्रता से लीन हुये कि फिर बाहर आये ही नहीं.... सुनने-सुनाने का व्यवहार भी फिर बोझ सा लगने लगा था।' फिर ?... मैंने पूछा....'फिर तो नवजीवन प्रभात कहीं इन्द्रलोक में ही हुआ होगा....' वे कहते-कहते ठहर गये।

'अद्भुत जीवन...अद्भुत मरण...' मैं कह पड़ा...।
प्रवचन, लेखन, चिन्तन सल्लेखन जिनमार्ग प्रवर्तन,
धन्य किया रे जीवन तुमने ! गुरु के शिष्य विलक्षण।

श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन के सभी 500 ट्रस्टियों की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित हैं। ●

बाबूजी को विनम्र श्रद्धांजलि

– शैलेष शास्त्री, इटावा

क्यों होता हर्षित अम्बर, पाकर एक सितारा।
आकर देख धरा पर, सावन लौटा दुबारा।।
अनुष्ठान ही धर्म बड़े, था अज्ञान अँधेरा।
पुण्य से प्रभुता आती, कहते पाखण्डी चेला।
गणधरवत् धर्म बढाया, खोल अध्यात्म पिटारा।
क्यों होता हर्षित...।।1।।

मानवता के मूर्तिमान, अरु संस्कार प्रणेता।
जग जीवन शिल्पकार, हम सबके चहेता।
ज्ञायक प्रभु के गायक, ने नाथ निरंजन निखारा।
क्यों होता हर्षित...।।2।।

चुन आगम मोती, अंतर कवित्व उदित हुआ।
पूजनीय गुरुदेव शास्त्र, शुद्धात्म वाच्य कहा।
बाण कहूँ कालिदास कहूँ, हो महापंडित निराला।
क्यों होता हर्षित...।।3।।

वसीयत में दी विश्व विभूति, विज्ञान प्रयोगशाला।
जहाँ चैतन्य चहल-पहल, गुरुदेव विरह न साला।
निजलोक किया प्रयाण, कर धरा से किनारा।
क्यों होता हर्षित...।।4।।

'शैल' पर 'ईश' बनो जुगल, 'किशोर-युग' अंत नहीं
मृत्युलोक में हुये अमर, हृदय में जीवन्त अभी।
वैराग्य का साक्षी सावन, नहीं अश्रु की धारा।
क्यों होता हर्षित...।।5।।

अध्यात्म-विद्या ही सारभूत

– डॉ. स्वर्णलता राकेश जैन, नागपुर

मेरी सांसें करती रहतीं, नित प्रति जिनका अभिनन्दन।
स्वर्गपुरी के दिव्य पुरुष को, कोटि-कोटि मेरा वन्दन।।

अध्यात्म-विद्या को जीवन में आत्मसात करने वाले श्रद्धेय बाबू युगलजी आज भले ही भौतिक शरीर के माध्यम से हमारे बीच में न रहे हों, परन्तु तत्त्वज्ञान का सन्देश, वे अभी भी अपनी रचनाओं के माध्यम से हमें दे ही रहे हैं।

ज्ञानियों का ऐसा मानना है कि अन्य लौकिक विद्याएँ तो हमारे साथ परभव में नहीं जाती हैं, लेकिन अध्यात्म-विद्या हमारे साथ अवश्य जाती है। जैसे राजा श्रेणिक के साथ नरक में, नकुल-सहदेव के साथ स्वर्ग में यह आत्म-विद्या गई है - इसके आगम में प्रमाण उपलब्ध हैं। इसीप्रकार तिर्यंचगति से महावीर का जीव, पूर्वभव से पण्डित टोडरमलजी एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी आत्म-विद्या के संस्कार लेकर आये थे - यह भी स्वत: सिद्ध है। आदरणीय बाबूजी के हृदय-पटल पर भी तत्त्व के इतने गहरे संस्कार थे; अत: वे भी अवश्य इन संस्कारों को अपने साथ लेकर गये हैं और जहाँ भी होंगे, अपनी आत्म-विद्या के बल पर वहाँ भी आत्मिक आनन्द में मस्त होंगे - ऐसा मेरा दृढ विश्वास है।

जिस डॉक्टर, इंजीनियर, सी.ए., व्यापार आदि लौकिक विद्याओं में हम अपने बहुमूल्य जीवन को बर्बाद करने पर तुले हैं, उसका एक अंश भी हमारे साथ नहीं जाता है; अत: समझदारी इसी में है कि हम अध्यात्म-विद्या को ही अपने जीवन का ध्येय बनायें। बाबूजी के प्रवचनों, लेखों, कविताओं या उनके चिन्तन में ही अकेले आध्यात्मिकता नहीं थी, बल्कि वह तो उनके समग्र जीवन में ही तिल में तेल के समान अविनाभूत थी।

इस प्रसंग में आदरणीय बाबूजी से संबंधित मैं अपने जीवन का एक संस्मरण आपके साथ शेयर करना चाहती हूँ।

बात सन् 1985, सागर में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर की है। इस शिविर में बाबू युगलजी भी पधारे थे। उस समय मैं युवा फैडरेशन की महिला शाखा की मंत्री थी। हमने दोपहर में 'आत्मानुभूति एवं तत्त्वप्रचार' इस विषय पर आध्यात्मिक संगोष्ठी का आयोजन किया था।

मैं स्वयं इस गोष्ठी का संचालन कर रही थी और बाबूजी को हमने अध्यक्षता के लिये तैयार कर लिया था। आ.बाबूजी दो घण्टे तक लगातार गोष्ठी में बैठे और प्रत्येक वक्ता को ध्यान से सुना। यद्यपि इस गोष्ठी के सभी वक्ता तो युवतियाँ एवं स्त्रियाँ ही थीं, परन्तु श्रोतावर्ग में पुरुषों की संख्या भी स्त्रियों के बराबर थी, अत: बाबूजी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हमारे महिला फैडरेशन की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि 'महावीर के सन्देश को इन महिलाओं ने आज सार्थक कर दिया है कि सभी आत्माएँ बराबर हैं, कोई छोटा-बड़ा नहीं है। इन महिलाओं को हम कमजोर न समझें, जिनशासन की बागडोर को पंचमकाल के अन्त तक ले जाने में ये सक्षम हैं।

इसके बाद एक प्रसंग और बना, जिसे बताने का लोभ संवरण मैं नहीं कर पा रही हूँ। कुछ दिनों बाद भोपाल में एक कार्यक्रम हुआ था, जिसमें झांझरी परिवार उज्जैन की दो बहिनें और एक भाई, आदरणीय बाबूजी के सानिध्य में ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर रहे थे। बहुत भव्य कार्यक्रम था, अत: मैं भी अपने फैडरेशन के सदस्यों के साथ भोपाल गई थी।

जब हम बाबूजी से मिलने गये तो हमारी किसी साथी ने उनको मेरा परिचय देते हुये कहा -'ये पण्डित श्री अभयजी की साली हैं, तो बाबूजी तत्काल बोले - 'जिसका स्वयं से परिचय न हो, उसका दूसरे से परिचय दिया जाता है। अरे ऐसा कहो कि सागर फैडरेशन की मंत्री आई है।'

मुझे यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि बाबूजी, अब तक हमें नहीं भूले थे। मानो वे यह आध्यात्मिक सन्देश दे रहे हों कि 'अरे ! स्वयं का स्वयं से परिचय भूलकर, अन्य से अपना परिचय कराना मानो स्वयं का विस्मरण है, स्वयं का अपमान है।'

इस आध्यात्मिक सन्देश के लिये मैं उनकी चिर ऋणी रहूँगी। ●

जीवन शिल्पी बाबू युगलजी

मुमुक्षु समाज के चमकते सितारे, कोटा समाज के हृदयरत्न, आध्यात्मिक प्रवक्ता, प्रतिष्ठित प्रवचनकार वात्सल्यमूर्ति, सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज के सर्वोत्कृष्ट विद्वान, साहित्य के उत्कृष्ट लेखनी के धनी आदरणीय बाबूजी का जीवन अत्यंत अद्भुत निराला है।

आदरणीय बाबूजी का जीवन 91 वर्ष की अवस्था में भी अस्वस्थ रहते हुये भी अपने आत्मा की धुन में सदैव मस्त रहे। यह मानो ऐसा लगता कि वे कह रहे हैं -

उछलता मेरा पौरुष आज, त्वरित टूटेंगे बंधन नाथ।
वे अपना परिचय पूजन की पंक्ति के माध्यम से कहते हैं -
उज्ज्वल हूँ कुंद धवल हूँ प्रभु, पर से न लगा हूँ किंचित् भी।

देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा इन महापुरुष के अंदर सदैव विद्यमान थी। उसी श्रद्धा के फलस्वरूप देव-शास्त्र-गुरु पूजन का प्रणयन बाबूजी की लेखनी से हुआ जो पूजन आज जगत में सबके कंठ का हार बनी हुई है।

अमूल्य तत्त्वविचार, सामायिक पाठ व दर्शन पाठ के अनुवादक हैं। बाबूजी की लेखनी से ही सर्वोत्कृष्ट कला और भावपक्ष की दृष्टि से सिद्धपूजन का भी लेखन हुआ।

आपकी विद्वत्ता, आपकी प्रकाण्डता की कोई मिसाल नहीं है। यदि ऐसा कहूँ तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पूज्य गुरुदेवश्री के बाद इस युग के आप दूसरे युगपुरुष हैं। आपके वियोग की पूर्ति हो पाना असंभव है।

मिथ्यात्व पर सीधा वज्रपात करने वाले विद्वान आदरणीय बाबूजी के जीवन में सतत एकमात्र ध्रुव सत्ता का चिंतवन चलता रहा। अंतिम समय तक भी ध्रुवतत्त्व को नहीं भूले ऐसे महापुरुष का अचानक वियोग महान दु:खद प्रसंग है।

अब बाबूजी हम सबके मध्य में अपनी रचनाओं द्वारा सदा प्रतिष्ठित रहेंगे। चैतन्य की चहल पहल एवं चैतन्य विहार ये दो अमर कृतियाँ बाबूजी का हम सबके लिये महान प्रदेय है।

बाबूजी की अंतिम भावना उन्हीं की पंक्तियाँ कहती हैं -

हम छोड़ चले यह लोक तभी, लोकान्त विराजें क्षण में जा।
निज लोक हमारा वासा हो, शोकान्त बनें फिर हमको क्या ?

अटूट देव-शास्त्र-गुरु के प्रति श्रद्धा, सतत अपनी परिणति में अपनी आत्मा का चिंतवन करने वाले महापुरुष को बारम्बार नमन...शीघ्र ही मुक्ति सदन में विराजमान हों, इन्हीं भावनाओं के साथ ...**– अमित जैन अरिहंत**

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 18 से 27 सितम्बर 2015 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

दिल्ली : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर विश्वास नगर स्थित दि. जैन मंदिर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रात्रि में प्रवचनसार, सल्लेखना एवं पश्चाताप विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात: डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अनिलजी इंजी इन्दौर, पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर, पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली के प्रवचनों का भी लाभ मिला। प्रात: दशलक्षण विधान का भी आयोजन हुआ।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल को **अध्यात्मदिवाकर** की उपाधि प्रदान कर सम्मानित भी किया गया।

आत्मार्थी ट्रस्ट : यहाँ गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा सल्लेखना एवं क्षमावाणी विषय पर दो दिन प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त आरम्भ के 4 दिनों तक ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के प्रवचन हुये। साथ ही डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा दोनों समय अष्टपाहुड, दोपहर में पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रवचनसार, ब्र. प्रज्ञाबेन व ब्र. रजनीबेन द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये। सायंकाल श्रीमती स्वर्णलता जैन द्वारा 11 प्रतिमाओं पर विशेष कक्षा ली गई। स्थानीय विद्वानों में डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, पण्डित वकीलचंदजी जैन, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री के प्रवचनों का भी लाभ मिला। सायंकाल आत्मार्थी बालिकाओं द्वारा प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

हरदा (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में ब्र.अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा दोनों समय दशलक्षण धर्म, समयसार कलश एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

सागर (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर परकोटा स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान के अतिरिक्त समयसार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म व मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में विदुषी लता जैन द्वारा दशलक्षण धर्म पर एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर चर्चा हुई। रात्रि में स्थानीय बालिकाओं/महिलाओं द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर वस्त्रापुर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन द्वारा प्रात: समयसार पर, दोपहर में तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म व विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: दशलक्षण मंडल विधान एवं रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

ब्रेम्पटन (कनाडा) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

प्रतिदिन प्रात: 3 घंटे पूजन व 1.5 घंटे तत्त्वार्थसूत्र के एक-एक अध्याय पर अर्थ सहित मार्मिक विवेचन। दोपहर में प्रतिदिन अमेरिका एवं कनाडा के अनेक नगरों के आत्मार्थियों हेतु बारह भावनाओं पर विशेष प्रवचन। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व दशलक्षण धर्म पर प्रवचन। लगभग 100-100 कि.मी. दूर से आकर लोगों ने धर्मलाभ लिया। 200 से अधिक लोग लाभान्वित।

वाशिम (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर दिगम्बर जैन मंदिर जवाहर कॉलोनी में पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा प्रात: समयसार पर, दोपहर में पंचलब्धि पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: पूजन-विधान, सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। बालकक्षा श्रीमती प्रेक्षा जैन द्वारा एवं अन्तिम चार दिन पण्डित प्रवीणजी द्वारा संस्कृत की कक्षा भी ली गई।

कोटा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर इन्द्रविहार स्थित सीमंधर जिनालय में पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड द्वारा समयसार व दशलक्षणधर्म पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

रात्रि में आचार्य कुन्दकुन्द कहान पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

पाठशाला के बच्चों ने भक्तामर पर आधारित अमरस्तवन व अकलंक धर्म प्रभावना नाटक का मंचन किया तथा वर्तमान समय के ज्वलंत विषय 'सल्लेखना आत्महत्या है या धर्म है' को अदालत के रूप में अनेक जैन शास्त्रों के उद्धरणों एवं अनेक तर्क-वितर्क के माध्यम से 'सल्लेखना धर्म ही है' इस सत्य को स्थापित किया।

इसकी रूपरेखा श्रीमती सीमा हरसौरा व पण्डित अभिलाष शास्त्री ने तैयार की तथा मधु पाटनी, आशा सौगानी व ज्योति पटवारी ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। **- मधु पाटनी, मंत्री**

ध्रुवधाम-बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर खांदू कॉलोनी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित विनोदजी जबेरा द्वारा दोनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें अध्याय पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात: जिनेन्द्र-पूजन, दोपहर में छात्र प्रवचन, सायंकाल सामायिक पाठ एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित चैतन्यजी शास्त्री व पण्डित प्रशांतजी शास्त्री ध्रुवधाम के निर्देशन में हुये।

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. मनोजजी जबलपुर द्वारा प्रात: पंचास्तिकाय, दोपहर में प्रवचनसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

कोलारस (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित आराध्यजी टडैया द्वारा दशलक्षण धर्म एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के पूर्व शंका-समाधान एवं तत्त्वचर्चा उल्लेखनीय रही।

औरंगाबाद (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा समयसार एवं जैनधर्म के विभिन्न मूल सिद्धान्त पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही हजारों रुपयों का साहित्य घर-घर पहुँचा।

ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ नझाई बाजार स्थित सीमंधर जिनालय में पण्डित संजयजी सेठी जयपुर द्वारा प्रात: समयसार पर, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर एवं सायंकाल दश धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। **- ऋषभ टडैया**

उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा प्रात: समयसार पर, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर एवं सायंकाल रत्नकरण्डश्रावकाचार के आधार पर दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: पूजन-विधान एवं सायंकाल बालकक्षा एवं रात्रि में भक्तामर पर कक्षा ली गई। **– जम्बू धवल**

ग्राम कानपुर-उदयपुर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री द्वारा प्रात: पूजन विधि पर और सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त बालकक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। क्षमावाणी के अवसर पर डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री द्वारा चौराहे पर जैन-अजैन समाज के बीच विशेष व्याख्यान हुआ। **– चम्पालाल जैन**

उदयपुर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर नेमिनाथ कॉलोनी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई द्वारा प्रात: समयसार एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: पूजन-विधान एवं रात्रि में महिला फैडरेशन एवं पाठशाला के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। **– डॉ. महावीरप्रसाद जैन**

चित्तौड़गढ (राज.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में पण्डित विमलचंदजी लाखेरी द्वारा दोनों समय रत्नकरण्ड श्रावकाचार, मोक्षमार्गप्रकाशक एवं अष्टपाहुड पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में तत्त्वचर्चा के माध्यम से शंका-समाधान हुये। रात्रि में प्रवचनोपरान्त स्थानीय निवासी पण्डित राहुलजी शास्त्री बिनौता द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

महिदपुर सिटी (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित विकासजी शास्त्री मौ द्वारा प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान हुआ। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक प्रवचनों के माध्यम से समाज में धर्म के प्रति रुचि जागृत हुई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

सोनगढ (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह में पर्व के अवसर पर पण्डित सोनूजी शास्त्री द्वारा प्रात: पूजन, दशलक्षण धर्म पर विशेष कक्षा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रथम बार नाटक का मंचन हुआ। नाटक के पश्चात् पण्डित सोनूजी शास्त्री द्वारा नाटक के विषय में चर्चा की गई। इस अवसर पर विद्यालय के अध्यापक पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित आत्मप्रकाशजी शास्त्री, श्रीमती शिखा जैन का भी लाभ मिला। क्षमावाणी के अवसर पर गुरुदेवश्री के विशेष प्रवचन का लाभ मिला।

कर्नाटक : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित राजेन्द्रजी पाटील द्वारा लकवल्लि में 3 दिन, दावणगेरे में 2 दिन, वीरापुर, हावेरि, हुब्बल्लि, अडगूरु, तुमकूर, निट्टूर और गुब्बि गाँवों में 1-1 दिन दशलक्षण धर्म एवं क्षमावाणी पर प्रवचनों का लाभ मिला।

पटाखा पोस्टर मंगायें

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के पावन अवसर पर पटाखों से होने वाली जन-धन हानि के प्रति लोगों को जागरूक करने हेतु विशाल रंगीन पोस्टर एवं हैंडबिल को प्रकाशित कर संपूर्ण देश के जिनमंदिरों, तीर्थक्षेत्रों, विद्यालयों, सार्वजनिक संस्थाओं को भेजा जायेगा।

जो महानुभाव पोस्टर व हैंडबिल प्राप्त करना चाहते हैं, वे संपर्क करें - संजय शास्त्री, बी-180, ए-2, मंगल मार्ग, बापूनगर, जयपुर-302015; मोबाइल - 09785999100

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट सम्मानित

'सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान' उपाधि से विभूषित

जयपुर (राज.) : यहाँ बिड़ला ऑडिटोरियम में अखिल भारतीय ओसवाल परिषद् द्वारा दिनांक 27 सितम्बर को आयोजित एक भव्य समारोह में श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षण के क्षेत्र में उसकी अनुपम उपलब्धियों के लिये ''सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान'' उपाधि से विभूषित किया गया।

अनेक गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में जस्टिस चोपड़ा की अध्यक्षता में आयोजित इस भव्य समारोह में जयपुर के मेयर श्री निर्मलजी नाहटा एवं ओसवाल परिषद् के संस्थापक चैयरमेन श्री रायचन्दजी खटेड के करकमलों सम्मान किया गया। टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से यह सम्मान श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्रीमती कमला भारिल्ल व ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने ग्रहण किया।

इस अवसर पर ओसवाल परिषद् की ओर से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत 12 अन्य संस्थाओं और व्यक्तियों को भी सम्मानित किया गया।

आदरणीय बाबूजी अंतिम संदेश में हमें किस प्रकार संबोधित करते-

एक परिकल्पना

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

अनादि से तो चल रहा है, संसार का ये सिलसिला
जन्म, जीवन, मृत्यु मिलकर, बन पड़ा यह काफिला
बिछुड़ गये कई बार मिलकर, फिर से मिले, फिर से जुदा
ये सिलसिले चलते रहे, तुम कहो हमको क्या मिला
सुध आई हमको आत्मा की, स्वरूप का निर्णय हुआ
मैं एक हूँ परिपूर्ण निज में, कोई मेरा कब हुआ
यह जानकर, निर्धारकर, निज रूप में स्थित हुआ
कोई आये कोई जाये, अब तक यही सब कुछ हुआ
ओ लोक के सब लोग सुन लो, अब भूल जाओ सब गिले
आधि व्याधि उपाधि तजकर, इस देह से अब हम चले
अब हम चले निजलोक में, संसार में अब ना भ्रमेंगे
तुम हमें अब भूल जाओ, मोक्ष में अब हम मिलेंगे
मुक्ति को अब कूच मेरा, स्वरूप में आवास होगा
लोकाग्र में होकर अवस्थित, सिद्धों से सहवास होगा।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

18 से 27 अक्टूबर	जयपुर (टोड. स्मारक भवन)	शिक्षण शिविर
31 अक्टू. व 1 नव.	इन्दौर (ढाईद्वीप)	वेदी शिलान्यास
8 से 12 नवम्बर	देवलाली-नासिक (महा.)	भ.महावीर निर्वाणोत्सव
18 से 25 नवम्बर	जयपुर (टोड. स्मारक भवन)	सिद्धचक्र मण्डल विधान
25 से 30 दिसम्बर	गढाकोटा (म.प्र.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
30 व 31 जन.2016	भोपाल (दीवानगंज)	वेदी शिलान्यास

17 अक्टूबर 2015, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

कम से कम लिखकर अधिक से अधिक प्रसिद्धि पाने वाले

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

वर्तमान विद्वानों और साहित्यकारों में से एक बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' पर यह उक्ति सम्पूर्णत: चरितार्थ होती है।

यूं यदि उनके दीर्घ जीवनक्रम परदृष्टिपात किया जाये तो उनकी साहित्य साधना अपर्याप्त ही प्रतीत होगी, पर साहित्य का मूल्यांकन उसकी मात्रा से नहीं, उसके पैनेपन से किया जाता है, उसके सौन्दर्य से, उसके लालित्य से, उसकी भाषा और शैली की तीक्ष्णता और उसके कथ्य से किया जाता है।

उक्त कसौटी पर उनका साहित्य निश्चित ही खरा उतरता है।

यदि यह कहा जाये तो भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि वे मात्र कम से कम लिखकर अधिक से अधिक प्रसिद्धि पाने वाले साहित्यकार ही न थे वरन् वे कम से कम कहकर अधिक से अधिक कह देने वाले साहित्यकार भी थे।

अपने उक्त कथन के समर्थन में मैं उनकी देव-शास्त्र-गुरु पूजन प्रस्तुत करना चाहूंगा, जहाँ मात्र कुछ ही छंदों के माध्यम से उन्होंने गुरु का सम्पूर्ण स्वरूप बिलकुल सही परिप्रेक्ष्य में इसप्रकार प्रस्तुत कर दिया है मानो साक्षात् मुनिराज हमारे समक्ष विराजमान हों।

वे इस सिद्धांत के मूर्तरूप थे कि 'धर्म परम्परा नहीं, स्वपरीक्षित साधना है।'

पूज्य गुरुदेवश्री के संपर्क में आने पर उन्होंने धर्म का सही स्वरूप समझा और अपने लिये वही मार्ग चुना।

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति संबोधित उनकी वे पंक्तियाँ स्वयं उनके चरित्र का भी दिग्दर्शन करती हैं कि 'धर्म शिशु जननी के आँचल में नहीं पलता है और माता-पिता की परम्परा से बँधकर धर्म नहीं चलता है'

वे साधनों की पवित्रता के प्रबल प्रवक्ता थे व सम्यग्दर्शन की साधना के सन्दर्भ में चर्चा करते हुये अपने व्याख्यानों में वे सदैव सम्यग्दर्शन की पात्रता के बारे में विस्तार से बड़ी सूक्ष्मता के साथ चर्चा किया करते थे।

जिज्ञासु, पात्र श्रोताओं को उनका संबोधन बड़ा सटीक, स्पष्ट और दृढतापूर्ण हुआ करता था, जिसमें अन्यथा प्ररूपण के लिये अवकाश नहीं रहता था। उनकी धाराप्रवाह भाषा एवं शैली भी सहज ही श्रोताओं का मन मोह लेने और उन्हें बाँधे रखने में सक्षम थी।

वे उन भाग्यशाली पात्रों में से एक थे, जिनका आदर स्वयं पूज्य गुरुदेवश्री भी करते थे।

तन से अत्यंत कोमल बाबूजी अपने विचारों में अत्यंत कठोर थे और अवसर आने पर किसी भी प्रकार की परवाह के बिना अपने विचार बड़ी दृढता के साथ प्रस्तुत करते थे।

उनके व्यक्तित्व ने ऊँचाईयों को छुआ पर वे सदा ही जमीन से जुड़े रहे, जनसामान्य ने कभी भी उन्हें अपने से पृथक् अनुभव नहीं किया। वे ऐसे जीवंततीर्थ थे जिनके समक्ष उनके जीवनकाल में सदा ही मेले से लगे रहे।

आज उनका महाप्रयाण हम सभी के लिये निश्चित ही एक अपूरणीय क्षति है। वे शीघ्र भवभ्रमण से मुक्त होवें – यही मंगल कामना है।

शोक समाचार

(1) जयपुर (राज.) निवासी श्री वीरेन्द्रकुमारजी जैन (दरगुवाँ वाले) का दिनांक 22 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अरविन्दजी शास्त्री के भ्राता एवं पण्डित प्रदीपजी शास्त्री व पण्डित प्रभातजी शास्त्री के पिताजी थे।

(2) प्रतापगढ (राज.) निवासी श्रीमती राजमती पतंगिया धर्मपत्नी श्री कांतिलालजी पतंगिया का दिनांक 20 सितम्बरको 72 वर्ष की आयु में अत्यंत समताभावपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) उदयपुर (राज.) निवासी श्रीमती अमृतदेवी का दिनांक 20 सितम्बर को 95 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1000/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

एडमोंटोन (कनाडा) में धर्मप्रभावना

एडमोंटोन/अल्बर्टा : यहाँ दिनांक 11 से 17 सितम्बर तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

यहाँ प्रतिदिन प्रात: लगभग 2 घंटे में एक पूजन विस्तार से अर्थ समझते हुये की जाती थी। दोपहर में प्रतिदिन कल्याणमंदिर स्तोत्र पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला तथा सायंकाल तीनलोक की चर्चा करते हुये चतुर्गति के दु:खों से छूटने के उपायों पर चर्चा हुई।

दिनांक 13 सितम्बर को विशाल जनसमूह के बीच राजमलजी पवैया कृत शांति विधान का सुन्दर आयोजन किया गया।

ज्ञातव्य है कि कनाडा के अल्बर्टा प्रान्त में पहली बार किसी दिगम्बर जैन विद्वान को आमंत्रित किया गया। **– सम्यगभाई शाह**

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127